Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति

डॉ. रिनी पुंडीर
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कालिंदी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

Article Info
Volume 5, Issue 6
Page Number : 33-39

Publication Issue :
November-December-2022

Article History
Accepted : 01 Dec 2022
Published : 20 Dec 2022

सारांश : वर्तमान में महिलाओं के जन्म पर लक्ष्मी का आगमन मानने वाले हमारे समाज में एक समय ऐसा भी था जब महिलाओं को केवल पुत्र पैदा करने वाली मशीन के रूप में उपयोग किया जाता था । भारतीय समाज में महिलाएं हमेंशा से ही परिवार का केन्द्र बिन्दु रही हैं, चाहे माता-पिता द्वारा विवाह के लिए दवाब डालना हो, विवाह के पश्चात सास-ससुर द्वारा बच्चा पैदा करने की मांग करनी हो या पति द्वारा नौकरी छोड़ने की सलाह देनी हो । हम आधुनिक युग में प्रवेश कर चुके हैं, यानी एक ऐसा समय जहां हमारे समाज में लगभग हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं, कई प्रकार के कानून बनाए गए हैं, महिला सशक्तिकरण के नाम पर कई प्रकार के अभियान भी चलाए जा रहे हैं, फिर भी इस तरह के कई उदाहरण आज भी हमें अपने आस-पास देखने को मिल जाते हैं, जहां महिलाएं असहाय और आश्रित की भांति अनिच्छा से अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं । ऐसे में क्या हमने कभी विचार किया है कि जब इन सभी सुविधाओं का अभाव था, तब महिलाओं का जीवन-यापन कैसा रहा होगा ? वैसे तो परिवर्तन प्रायः किसी भी चीज को बेहतर बनाने की दिशा में किया गया प्रयास होता है । परिवर्तन जो कि प्रकृति का एक अभिन्न अंग है और जिससे हमारे समाज का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है, जिसने हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति पर भी अपनी छाप छोड़ी है, क्या वास्तव में हर बार इसने परिस्थितियों को बेहतर बनाया है ? विचार करने पर हम पाएंगे कि नहीं, कई बार प्रकृति के इस नियम ने भी महिलाओं के साथ भेद किया है यानी उनकी स्थिति को पहले की तुलना में दयनीय भी बनाया है । जी हां, हम बात कर रहे हैं प्राचीन युग के पश्चात मध्यकालीन युग में महिलाओं की स्थिति में हुए परिवर्तन की, जिसने महिलाओं की स्थिति को प्रगति पथ पर ले जाने के बजाय गर्त में ढकेल दिया ।

बीज शब्द : मध्यकालीन भारत, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, आधुनिक समाज, भारतीय महिला ।

महिला, तीन अक्षर का यह छोटा सा शब्द सुनते ही हमारे मन में अलग-अलग प्रकार की भावनाएं उत्पन्न होती हैं, किसी के मन में एक आश्रित, असहाय और अबला रूपी स्त्री की छवि बनती है तो किसी के मन में एक आत्मनिर्भर और सशक्त स्त्री की, किसी के मन में गृहणी की छवि उभरती है, तो कोई कामकाजी महिला की कल्पना करता है, आज के दौर में तो बिजनेस वुमेंन और सक्षम राजनेता की कल्पना भी की जा सकती है । किन्तु क्या पुरूष शब्द सुनकर भी आपके मन में ऐसी ही विभिन्न प्रकार की छवियां उभर रही हैं? नहीं न ! इसका कारण शायद यही है कि हमारे पुरूष प्रधान देश में पुरूषों की स्थिति में कभी गिरावट आई ही नहीं है यानी इनकी स्थिति तो हमेंशा से स्वर्ण की तरह ही रही है जो हर परिस्थिति में

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

बहुमूल्य ही होता है । स्पष्ट है कि प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत तक महिलाओं की स्थिति में निरंतर परिवर्तन हुआ है । कभी इसमें सुधार हुआ तो कभी इसका ह्रास भी हुआ, जो पुरूषों की स्थिति के साथ नहीं हुआ । यही कारण है कि पुरूष वर्ग को हमेंशा से ही हमारे समाज में बुद्धिमान, सशक्त और बलशाली व्यक्ति के पर्याय के रूप में देखा गया है और पुरूषों के संदर्भ में कभी भी अबला, असहाय और आश्रित जैसे विशेषण के उपयोग की कल्पना भी नहीं की गई ।

प्राचीन काल में महिलाओं को लगभग हर क्षेत्र में कुछ सीमित अधिकार प्राप्त थे और परिवार में उनका सम्मान भी किया जाता था । यही कारण है कि धार्मिक कार्यों में महिलाओं की उपस्थिति अनिवार्य थी, यानी कोई भी शुभ या धार्मिक कार्य महिलाओं के बिना संपन्न नहीं किया जाता था । **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता** यह छोटा सा श्लोक प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति को वर्णित करने के लिए पर्याप्त है । लेकिन जैसे हमारे जीवन में दुख स्थायी नहीं होता, वैसे ही सुख की भी एक अवसान तिथि होती है, जो नियत समय के पश्चात समाप्त हो जाती है । कुछ ऐसा ही महिलाओं के साथ भी हुआ । प्राचीन काल में महिलाओं को प्राप्त सीमित स्वतंत्रता और अधिकारों को और सीमित करते हुए मध्यकाल में महिलाओं को मात्र घर की चारदीवारी प्रदान की गई । मध्यकाल के दौरान अनेक सामाजिक कुप्रथाएं भी हमारे समाज में पोषित हुई । पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह पर रोक, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं का न केवल जन्म हुआ बल्कि उनके भरण – पोषण का भी पूरा ध्यान रखा गया । सबसे अजीब बात यह है कि जहां एक ओर अपने परिवार की महिलाओं का संरक्षण करने के उद्देश्य से उन्हें चारदीवारी में रहने का निदेश दिया गया, वहीं दूसरी ओर कुछ महिलाओं को वेश्यावृत्ति का मार्ग भी प्रशस्त करवाया गया । **नियम और कानून सभी के लिए समान होते हैं ।** यह कथन आज भी कागजी है और तब भी कागजी ही था ।

इन सामाजिक कुप्रथाओं के आगमन के पश्चात मध्यकाल में महिलाओं की सामाजिक दुर्दशा का अंदाजा लगा पाना अधिक कठिन नहीं है । इतनी कुरीतियों के बावजूद भी यदि महिलाएं अपनी उपलब्धियों के कारण मध्यकालीन इतिहास में अपना नाम दर्ज करवाने में सफल हो पाई है, तो उनके संबंध में नि:संदेह हमें जानने की आवश्यकता है । कुछ लोगों को उक्त दोनों कथन विरोधाभासी लग सकते हैं, क्योंकि जहां एक ओर हम कुप्रथाओं और महिलाओं की दयनीय स्थिति की बात कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी उपलब्धियों और इतिहास के पन्नों में दर्ज उनके नाम की बात कर रहे हैं । यहां यह स्पष्ट करना उचित होगा कि नि:संदेह मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति दयनीय रही किन्तु पर्याप्त बाधाओं के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति के क्षेत्र में अपना लोहा मनावाया है । इतना ही नहीं कुछ महिलाओं ने साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त की । मध्यकाल में कई महिलाओं ने कला और संगीत के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया । राजनीतिक स्थिति पर चर्चा करने से पूर्व मध्यकालीन भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर एक नजर डालते हैं ।

आर्थिक स्थिति : भारतीय संविधान के जनक बाबा साहेब अंबेडकर ने कहा था कि **"मैंकिसी समुदाय की प्रगति, उस समुदाय में महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से मापता हूं।"**यानी किसी भी परिवार, समाज, राज्य,देशया काल की प्रगति महिलाओं की प्रगति के बिना अपूर्ण है । स्पष्ट है कि किसी भी समुदाय की सम्पूर्ण प्रगति तब तक नहीं हो सकती,जब तक वहां की महिलाएं प्रगति न करें। हमारा समाज भले ही पुरुष प्रधान है, लेकिन इसका निर्माण महिला और पुरुष दोनों की समान भागीदारी से ही संभव है । इसलिए केवल पुरुषों की प्रगति समाज की प्रगति के लिए पर्याप्त नहीं है, समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए महिलाओं की प्रगति भी आवश्यक है । यह कथन तो हम सभी ने सुना है कि महिला और पुरुष परिवार रूपी बैलगाड़ी में जुते हुए दो बैल के समान है । ऐसे में यदि एक बैल आगे निकल जाए और दूसरा बैल पीछे ही रह जाए,फिर तो ऐसे परिवार यानी बैलगाड़ी पर सवार यात्रियों का भविष्य भगवान के भरोसे ही होगा ।

जहां तक महिलाओं की आर्थिक स्थिति की बात है, तो यह केवल मध्यकालीन भारत में ही नहीं बल्कि भारत के प्रत्येक युग और काल में दयनीय ही रही है । आर्थिक स्वतंत्रता की लड़ाई तो महिलाएं हमेशा से ही लड़ती आई हैं और न जाने यह युद्ध कब समाप्त होगा? वर्तमान दौर यानी महिला सशक्तिकरण के दौर में भी महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है, कभी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए माता-पिता से, तो कभी अपनी नौकरी को न छोड़ने के लिए अपने पति से । इसका कारण शायद यही है कि हमारे सभ्य समाज में परिवार के उचित देखभाल के लिए महिलाओं और पुरुषों की जिम्मेदारियां और अधिकार बांट दिए गए हैं । जैसे बच्चों को संभालने की जिम्मेदारी महिलाओं की और संपत्ति संभालने की जिम्मेदारीपुरुषों की,ऐसे ही भोजन बनाने का अधिकार महिलाओं को प्राप्त है और परिवार संबंधी निर्णय लेने का अधिकार पुरुषों को । इन रूढ़ हो चुके नियमों से आधुनिक भारत भी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है । अब आधुनिक भारत में यदि स्थिति ऐसी है, तो मध्य काल में कैसी रही होगी? इसका अंदाजा हम सभी लगा ही सकते हैं ।

जहां तक मध्यकालीन समाज में भारतीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति का प्रश्न है? अधिकांश महिलाएं आर्थिक रूप से परतंत्र थी । हालांकि मध्य अठाहरवीं शताब्दी के दौरान कुछ भारतीय महिलाएं अपना व्यवसाय जैसे खुदरा दुकानें और लघु हथकरघा आदि आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने लगी थी। हाल ही में इतिहासकार समिरा शेख के अनुसंधान से प्रकाश में आया कि ब्रिटिश हुकुमत के समय जमींदारी जैसे पारिवारिक व्यवसाय में अपनी अनूठी छाप छोड़ने वाली गुजरात के भरूच की जिभाभू नामक महिला आधुनिक युग की महिला उद्यमियों को एक नई राह दिखाती है। जमींदारी जैसे पारिवारिक व्यवसाय में अन्य पुरूषों से होने वाली प्रतिस्पर्धा के बावजूद जिभाभू ने न केवल ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अपने पति से जब्त की गई भूमि को वापस प्राप्त किया बल्कि महिला जमींदार और उसकी फर्म की स्थानीय प्रतिष्ठा को बनाए रखने में भी सफलता हासिल की।

मध्यकालीन समाज में सभी महिलाओं की स्थिति एक जैसी थी ऐसा भी नहीं है। मसलन आर्थिक रूप से मुस्लिम महिलाओं की स्थिति हिन्दू महिलाओं की तुलना में अच्छी थी । मुस्लिम महिलाओं को अधिकार के रूप में अपने पिता की सम्पत्ति पर बराबर का अधिकार प्राप्त था । हिन्दू महिलाओं के विपरीत उनका यह अधिकार विवाह के बाद भी बना रहता था। मुस्लिम स्त्री की आर्थिक स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए पति को एक विशेष धन अपनी पत्नी को देना पड़ता था, जिसे 'मेहर' के नाम से जाना जाता था । यदि कोई पुरूष दूसरा विवाह भी कर लेता था, तब भी वह अपनी पहली पत्नी को दिया धन वापस नहीं ले सकता था । इसके विपरीत हिन्दू महिलाओं को अपने पति की सम्पत्ति में से कोई अधिकार नहीं मिलता था, लेकिन पति की मृत्यु के बाद पति की सम्पत्ति में से उनके जीवन निर्वाह की व्यवस्था की जाती थी । अचल संपत्ति के रूप में महिलाओं के अधिकारों के विभाजन की जानकारी किसी भी धार्मिक ग्रंथ में प्राप्त नहीं होती है।[1]

कुल मिलाकर मध्यकाल में आर्थिक अधिकारों के नाम पर मुस्लिम महिलाओं के पास पिता और पति की संपत्ति तथा हिन्दू महिलाओं के पास आभूषणों के अलावा शायद ही कुछ रहा होगा । यानी जिन महिलाओं को वर्तमान में लक्ष्मी के नाम से संबोधित किया जाता है, वही महिलाएं हमेशा से लक्ष्मी (धन) के लिए पहले अपने पिता फिर पति और फिर पुत्र पर निर्भर रही है ।

राजनीतिक स्थिति : हाल ही में "लोकनीतिसीएसडीसी (Centre for Study of Developing Societies) और कोनराड एडेनॉयर स्टिफटंग (Konrad Adenauer Stiftung)" ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी की, जिसमें भारतीय महिलाओं और उनकी राजनीतिक सक्रियता से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया गया। सर्वेक्षण में लगभग 66%

[1].International Journal of Information Movement, Vol-I, Issue-III, July 2016

महिलाओं ने कहा कि वे राजनीतिक निर्णय लेने के मामले में अभी भी स्वायत्त नहीं हैं।[2]महिला सशक्तिकरण और विभिन्न जागरूकता अभियान के बाद भी वर्तमान भारत में राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की यह स्थिति है ।

अब अगर हम बात करें मध्यकाल में राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति की, तो मध्यकाल में राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी केवल मत देने तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि निर्णय क्षमता का विकास, राजनैतिक क्रियाकलाप में हिस्सेदारी एवं राजनैतिक सजगता आदि में भी महिलाओं का योगदान रहा । भारत में मध्यकाल महिलाओं के लिए जहां एक ओर पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी सामाजिक कुप्रथाओं को लेकर आया वहीं दूसरी ओर राजनैतिक प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त किया । मध्यकाल के दौरान शासन प्रबंधन के क्षेत्र में महिलाओं ने अहम भूमिका निभायी है । कुछ उदाहरण निम्न बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं :

शाह तुर्कान : इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान एक तुर्की दासी थी । उसे शासन संबंधित ज्ञान प्राप्त था । इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसके बड़े पुत्र रुकुनुद्दीन फ़िरोज़शाह को उसका उत्तराधिकारी बनाया गया । विलासी प्रवृत्ति का होने के कारण रुकुनुद्दीन शासन के कार्यों में रुचि नहीं लेता था । इसलिए उसे विलास-प्रेमी जीव कहा गया है। रूकुनुद्दीन में सुल्तान बनने के गुणों का सर्वथा अभाव था । अपने पुत्र को विलासिता में डूबा हुआ देखकर शाह तुकार्न ने साम्राज्य की बागडोर अपने हाथों में ले ली और शासन संबंधी निर्णय लेना तथा राजकीय कार्यों का सम्पादन करना आरम्भ कर दिया ।[3]

रजिया सुल्तान : रज़िया-अल-दिन, शाही नाम "जलॉलात उद-दिन रज़ियॉ", इतिहास में जिसे सामान्यत: "रज़िया सुल्तान" के नाम से जाना जाता है, वहदिल्ली सल्तनतकी सुल्तान थी । उसने 1236 ई से 1240 ई तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया । रजिया पर्दा प्रथा त्याग कर पुरूषों की तरह खुले मुंह राजदरबार में जाती थी । वहइल्तुतमिशकी योग्य पुत्री थी। तुर्की मूल की रज़िया को अन्य मुस्लिम राजकुमारियों की तरह सेना का नेतृत्व तथा प्रशासन के कार्यों का अभ्यास कराया गया था, ताकि ज़रुरत पड़ने पर उसका इस्तेमाल किया जा सके ।

इल्तुतमिश पहला ऐसा व्यक्ति था, जो अपनी पुत्री को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था । किन्तु समाज के कुछ वर्ग को इल्तुतमिश द्वारा किसी महिला को उत्तराधिकारी बनाना स्वीकार नहीं था, इसलिए उसकी मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र रुकुनुद्दीनफ़िरोज़ शाहको उसका उत्तराधिकारी बनाया गया । किन्तु जैसा कि हमने ऊपर पढ़ा, रुकुनुद्दीन एक विलासिता प्रिय शासक था, जिसके कारण उसकी मां शाह तुर्कान ने साम्राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली थी, उनकीक्रूरता और अत्याचारों से जनता में असंतोष की भावना उत्पन्न हुई ।

तेरहवीं शताब्दी के भारतीय सुल्तानों में रजिया का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था । वह एक महान शासिका थी, जिसमें योग्य शासक के समस्त गुण विद्यमान थे । रजिया ने जनपद की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अनेक प्रशासकीय कदम उठाए ।

चाँद बीबी: चांद बीबी जिन्हें 'चांद खातून' या 'चांद सुल्ताना'के नाम से भी जाना जाता है,वो अहमदनगर के तीसरे शासक हुसैन निजामशाह प्रथम की पुत्री थी,जिनका विवाह बीजापुर के पांचवे सुल्तान अली आदिलशाह के साथ हुआ था । सन् 1580 ई. में पति की मृत्यु हो जाने पर वह अपने नाबालिग बेटे इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय की अभिभाविका बन गई ।

---

[2] https://www.csds.in/studiesinindianpolitics

[3] .https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B0%E0%A5%81%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%A8%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%9C%E0%A4%BC%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B9

बीजापुर का प्रशासन मंत्रियों द्वारा चलाया जाता रहा । सन् 1584 ई में चांद बीबी बीजापुर से अपनी जन्मभूमि अहमदनगर चली गई और फिर कभी बीजापुर नहीं गई । सन् 1593 ई में मुगल बादशाह अकबर की फौजों ने अहमदनगर राज्य पर आक्रमण किया । संकट की घड़ी में चांद बीबी ने अहमदनगर की सेना का नेतृत्व किया और अकबर के पुत्र शाहजादा मुराद की फौजों से बहादुरी के साथ सफलतापूर्वक मोर्चा लिया । किन्तु सीमित साधनों के कारण अंत में चांद बीबी को मुगलों से संधि कर लेनी पड़ी । लेकिन संधि के बाद जल्द ही लड़ाई शुरू हो गई । चांद बीबी की सुरक्षा व्यवस्था इतनी मजबूत थी कि उसके जीवित रहते मुगल सेना अहमदनगर पर कब्जा नहीं कर सकी । किन्तु एक उग्र भीड़ ने चांद बीबी को मार डाला और इसके बाद अहमदनगर किले पर मुगलों का कब्जा हो गया ।[4]

मुगलराजकुमारीजहाँआरा: जहाँआरा का जन्म 23 मार्च, 1614 में अजमेर में हुआ था। चौदह वर्ष की उम्र से ही अपने पिता के राजकीय कार्यों में उनका हाथ बंटाती थी। जहाँ आरा 'पादशाह बेगम' या 'बेगम साहब' के नाम से भी प्रसिद्ध रही। जहाँ आरा फ़ारसीके पद्य और गद्य की अच्छी ज्ञाता थी और साथ ही इन्हें वेद का भी ज्ञान था। इनकी माता मुमताज़ महल की मृत्यु के बाद जहाँआरा जीवनभर शाहजहाँ की सबसे अधिक विश्वासपात्र बनी रही। सबकी सम्मान-भाजन होने के कारण सभी राजकीय कार्यों में जहाँआरा से परामर्श लिया जाता था ।[5]

जीजाबाई : बच्चे अपने माता-पिता का ही स्वरूप होते हैं । यानी प्रत्येक बच्चे में अपने माता-पिता के कुछ गुण विद्यमान होते हैं । इसलिए ऐसा माना जाता है कि किसी शूरवीर को जन्म देने वाली माताभी किसी वीर से कम नहीं होती । शिवाजी जैसे शूरवीर को जन्म देने वाली जननी जो 'जीजाबाई' के नाम से प्रसिद्ध है, वह बहुत ही चतुर और बुद्धिमान महिला थी, उन्होंने मराठा साम्राज्य के लिए अनेक ऐसे फैसले लिए जिनके कारण स्वराज स्थापित हुआ । जीजाबाई एक तेजस्वी महिला थीं, जीवन भर पग-पग पर कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य नहीं खोया। उन्होंने शिवाजी को महान् वीर योद्धा और स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र का छत्रपति बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति, योग्यता और बुद्धिमत्ता लगा दी। शिवाजीकी माँ जीजाबाई को एक योद्धा और एक प्रशासक के रूप में उनकी क्षमता के कारण क्वीन रीजेंट के रूप में पदस्थापित किया गया था।

नूरजहां : नूरजहाँ मुग़ल सम्राट जहाँगीर की पत्नी थी। उनका मूल नाम 'मेहरुन्निसा' था। उनके पिता ग़ियासबेगअकबरके दरबार में एक उच्च पद पाने में सफल हुए थे और 1605 ई. में जहाँगीर के राज्यारोहण केवर्षही वह मालमंत्री नियुक्त हो गए। उसे 'एत्मादुद्दोला' की उपाधि दी गई थी। नूरजहाँ असाधारण व्यक्तित्व और बुद्धिमत्ता वाली स्त्री थी, जहाँगीर ने शासन का समस्त भार उसी पर छोड़ रखा था।विवाह के बाद नूरजहाँ ने 'नूरजहाँ गुट' का निर्माण किया। इस गुट के महत्त्वपूर्ण सदस्य थे- नूरजहाँ बेगम, एत्मादुद्दौला या मिर्ज़ा ग़ियासबेग़, अस्मत बेगम (नूरजहाँ की माँ),आसफ़ ख़ाँ(नूरजहाँ का भाई) एवंशाहज़ादा ख़ुर्रम(शाहजहाँ)। यह गुटमुग़लदरबार में जहाँगीर के विवाह के तुरन्त बाद ही सक्रिय हो गया, जिसका प्रभाव 1627 ई. तक रहा। असाधारण सुन्दरी होने के अतिरिक्त नूरजहाँ बुद्धिमती, शील और विवेक सम्पन्न भी थी। उसकीसाहित्य,कविताऔर ललित कलाओं में विशेष रुचि थी। उसका लक्ष्य भेद अचूक होता था। सन् 1619 ई. में उसने एक ही गोली से शेर को मार गिराया था। इन समस्त गुणों के कारण उसने अपने पति पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

---

4 .https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%81%E0%A4%A6%E0%A4%AC%E0%A5%80%E0%A4%AC%E0%A5%80

5 .https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%9C%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%81%E0%A4%86%E0%A4%B0%E0%A4%BE

इसके फलस्वरूप जहाँगीर के शासन का समस्त भार उसी पर आ पड़ा था। सिक्कों पर भी उसका नाम खोदा जाने लगा और वह महल में ही दरबार करने लगी।[6]

उक्त चर्चित महिलाओं के अलावा भी कई महिलाएं मध्यकाल के दौरान अपने प्रयासों और कार्यों के माध्यम से अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहीं, जिनमें मीराबाई का नाम उल्लेखनीय है । किन्तु हम इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं कर सकते हैं कि महिलाओं की उपलब्धियों की यह गाथा केवल राजघरानों एवं समृद्ध परिवार तक ही सीमित थी, सामान्य महिलाएं जिनकी सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, उन्हें तो मात्र पीड़ा और कष्ट ही मिले । मध्यकालीन भारत में महिलाओं की यह स्थिति देखकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की निम्न पंक्तियां याद आ रही हैं :

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखों में पानी ।।

सत्य ही तो लिखा है कवि ने हमारे समाज में यही तो कहानी रही है महिलाओं की । भारत में महिलाओं की स्थिति कभी भी एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में तदनुरूप बदलाव भी होते रहे हैं। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति,प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं। किन्तु इस यात्रा को तय करने में महिलाओं को कितने मील के पत्थर पार करने पड़े हैं, कोई और नहीं स्वयं हमारा समाज इसका साक्षी है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अपने आप में एक इतिहास है, जिसे केवल किसी एक युग अथवा काल के अध्ययन से समझ पाना संभव नहीं है । प्रत्येक युग में महिलाओं की भिन्न-भिन्न स्थिति को जानने की आवश्यकता है और उन पर विचार कर, आवश्यकतानुसार सुधार करने की भी आवश्यकता है । समय आ गया कि अब हमारा समाज महिलाओं के महत्व को समझे और केवल कागजों में ही नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप में भी उन्हें समान अधिकार प्रदान करें ।

संदर्भ सूची :

1. International Journal of Information Movement, Vol-I, Issue-III, July 2016
2. https://www.csds.in/studiesinindianpolitics
3. https://m.bharatdiscovery.org/india
4. https://bharatdiscovery.org/india
5. https://bharatdiscovery.org/india
6. https://bharatdiscovery.org/india/

[6] https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%A8%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A4%9C%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%81